पद ७

(राग: पिलु - ताल: धुमाळी)

कुणि आणा हो भक्तसखा (दीनप्रभू) तो आणा। चैतन्य देशिंचा (आनंद देशिंचा) राणा।।धु.।। जन भुलला हो निज मायेनें भुलला। महाविषय मृगजळीं बुडला। या पंचभूतां सत्य कल्पुनी रमला। बहु जन्म जन्मुनी गेला।।१॥ मोहशक्तीनें (मोह वैऱ्यानें) जीवा घातचि केला। प्रिय (जन) स्वस्वरूपां हो मुकला। जग (जन) उपकारा जाउनि त्या श्रीचरणां। या भवदु:खा वाखाणा॥ (चाल) कोणि विश्वां हितगुज सांगा। मी देह (जीव) बुद्धि ही त्यागा। जा सिच्चदानन्द पदीं लागा। ज्ञानमार्तागुडा दिव्यदृष्टिनें (आत्मदृष्टिनें) जाणा। जग ब्रह्म हेंचि मिनं आणा॥२॥